ईसुरी-प्रकाश

बुन्देली लोक रागनी के अमर-गायक ईसुरी की रसमय फागों का संकलन

सम्पादक :

श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

बुन्देल-वैभव, सुकवि-सरोज, गीता-गौरव आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता

बुन्देलभारती-प्रकाशन

खत्रयाना, झाँसी (उ. प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक :

द्वारिकेश मिश्र

बुन्देलभारती-प्रकाशन, झाँसी

द्वितीयावृत्ति १९६५

सर्वस्वत्व सुरक्षित

मूल्य—चार रुपया

मुद्रक :

द्वारिकेश मिश्र

श्रीराम प्रेस, झाँसी

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

प्रकाशकीय

द्वारिकेश मिश्र ३

प्राक्कथन

ओरछेश श्री वीरसिंह जू देव ९

दो शब्द

पद्मभूषण डा० श्री वृन्दावनलाल वर्मा १७

स्थापना

डा० रामविलास शर्मा १९

भूमिका

श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' २५

ईसुरी-परिचय

कवि की संक्षिप्त जीवनी ४१

राम-रसायन

रामावतार विषयक फागें ५२

द्वापर-दर्शन

कृष्णावतार-विषयक फागें ६१

प्रकृति-पूजन

ऋतुकाल विषयक फागें ८७

Scanned with OKEN Scanner

नयनामृत-प्रवाह

नेत्र विषयक सरस फागें ९७

प्रेम पयोनिधि

रजऊ विषयक फागें ११३

परिचयात्मक

कवि के आत्म परिचय विषयक फागें १४१

विविधा

विविध विषयक फागें १५३

परिशिष्ट

अनुक्रमणिका

शब्दार्थ २१७

याके ··· इसके
बैंगर ··· ऐंगर, समीप
रये ··· रहे
रओ ··· रहा
रइयो ··· रहना
रजउ ··· रजौआ, सजनी के समान प्रेमिका का सम्बोधन
रमाने ··· भेज दिए
रपै ··· ठहरें
राने ··· रहना है
रन जोरन ··· युद्ध करने वाली
रै गये ··· रह गए
रीते ··· खाली
रोजउ ··· नित्य ही
लटी ··· बुरी
ललत ··· ललित, सुन्दर
लक्षारी ··· बड़ी
लरैया ··· लड़ने-झगड़ने को उद्यत
लये ··· लयें, लिए
लाने ··· लिए
लौं ··· तक
लुड़का ··· गिरा
लिवौआ ··· लिवा ले जाने वाले
लुक ··· छिप
लंच ··· मैल
लमछौंही ··· लम्बी
लाक ··· लायक, योग्य
लोंदा ··· गेंद
सिभु ··· शम्भु, महादेव
सकरौंदा ··· पतली गली
संजा ··· संध्या
सबई ··· सब ही
सहजऊ ··· सहज ही
सबरऊ ··· सब ही
सक्त ··· शक्ति
सनेह ··· शनि ही के
ससाके ··· फूंक कर
सपरो-खोरो ··· नहाओ-धोओ
सकियां ··· सहेली
समर कें ··· सँभल कर
समई ··· शमादान
सारज ··· साले की स्त्री
सारी ··· साले की बहिन
सामो ··· सामने से
सांसें ··· छेद
सात ··· साथ
सावकी ··· बड़े आदमी की
साको ··· चाव, शौक
सांसउं ··· सत्य ही, सांचउं
सानी ··· बराबरी
सातन ··· सहते हुए
सीके ··· शिक्षा ले ली
सिसो ··· सिचा हुआ